Fallacy of Inferance - अनुमान के दोष

Faulty Reason - हेत्वाभास

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan

(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

समान्यतः हेत्वाभास का अर्थ हेतु के अभाव से लगाया जाता है।हेतु अनुमान के लिए आवश्यक है, इसके बिना अनुमान सम्भव नहीं है परन्तु इसे दोषमुक्त होना चाहिए ,जब अनुमान दोषयुक्त हो जाता है तब वह हेतु जैसा आभासित होता है ,वह हेतु होता नहीं है।यही कारण है कि इसे हेत्वाभास कहा जाता है।हेत्वाभास के पाँच प्रकार बताये गये हैं : - सब्यभिचार ,विरुद्ध ,सत्यप्रतिपक्ष ,असिद्ध और बाधित ।

सब्यभिचार - सब्यभिचार का दोष तब होता है जब हेतु का सम्बन्ध कभी साध्य से रहता है और कभी साध्य से भिन्न किसी अन्य वस्तु से रहता है।उदाहरण के लिए :-

जो भी ज्ञात वस्तु है उसमें आग है

पहाड़ ज्ञात वस्तु है

अतः पहाड़ पर आग है

यह अनुमान गलत है क्योंकि यहाँ ज्ञात वस्तु और आग का सम्बन्ध ठीक नहीं है।बहुत से ऐसे ज्ञात वस्तु जैसे - तालाब, नदी,समुद्र आदि हैं जिनमें आग नहीँ होती।इस तरह अनुमान का आधार ही गलत है।

सब्यभिचार दोष के भी तीन प्रकार हैं : -

साधारण ,असाधारण और अनुपसंहारी।

साधारण सब्यभिचार में हेतु अतिव्याप्त होता है।

असाधारण सब्यभिचार में हेतु अव्याप्त होता है।

अनुपसंहारी सब्यभिचार तब होता है जब हेतु का दृष्टान्त न तो भाव में मिलता है और न अभाव में।

विरुद्ध - हेतु के आधार पर अनुमान किया जाता है परन्तु जब हेतु साध्य की सिद्धि न करके विपरीत तथ्य को सिद्ध करने लगता है तब उसे विरुद्ध कहा जाता है।उदाहरण के लिए - संसार नित्य है ,क्योंकि वह कार्य है।

कार्य से नित्यता नहीं बल्कि अनित्यता सिद्ध होती है।विरुद्ध और सब्यभिचार में यह अन्तर है कि विरुद्ध हेतु का साध्य के अभाव से नियत साहचर्य होता है जबकि सब्यभिचार हेतु का न साध्य से नियत साहचर्य होता है और न साध्य के अभाव से।

सत्यप्रतिपक्ष -जब साध्य के अनुकूल और प्रतिकूल दो हेतु हों तब उन्हें सत्यप्रतिपक्ष कहा जाता है ,जैसे - शब्द नित्य हैं क्योंकि वह श्राब्यहै ,शब्द अनित्य है क्योंकि वह घट की तरह कार्य है।

दोनों में कौन सही है यह नहीं कहा जा सकता क्योंकि ये दोनों अनुमान एक दूसरे के विरोधी हैं।सत्यप्रतिपक्ष विरुद्ध हेतु से भिन्न होता है, विरुद्ध हेतु उल्टी बात को सिद्ध करता है यद्यपि वह एक बात को सिद्ध करने के लिए प्रयुक्त होता है।सत्यप्रतिपक्ष हेतु में उल्टी बात को सिद्ध करने वाला दूसरा हेतु होता है।

असिद्ध - जो हेतु साध्य को सिद्ध करने के बदले स्वयम असिद्ध हो जाये उसे असिद्ध हेत्वाभास कहा जाता है।इसके तीन रूप हैं - आश्रयासिद्ध ,स्वरूपासिद्ध और अन्यथासिद्ध।

आश्रयासिद्ध - जब कोई हेतु पक्ष असिद्ध हो तब उसे आश्रयासिद्ध कहा जाता है।

स्वरूपासिद्ध - हेतु जब पक्ष में नहीं पाया जाता है तब उसे स्वरूपासिद्ध कहा जाता है ,जैसे - आवाज नित्य है क्योंकि वह अदृश्य है, अतः आवाज में दृश्यता का होना सिद्ध नहीं होता।हेतु का स्वरूप ही असिद्ध होने के कारण इसे हेतु नहीं बनाया जा सकता।

अन्यथासिद्ध - जब दिये गये हेतु के अभाव में साध्य की सिद्धि की संभावना रहती तब उसे अन्यथासिद्ध कहा जाता है ,जैसे - वह वीर है क्योंकि क्षत्रिय है।यह आवश्यक नहीं है कि जो क्षत्रिय हो वह वीर ही हो।यहाँ वीर और क्षत्रिय में व्याप्ति सम्बन्ध नहीं बनता।

बाधित - जब हेतु द्वारा सिद्ध साध्य अन्य प्रमाण से बाधित हो जाता है या खंडन हो जाता है तब उसे बाधित हेत्वाभास कहा जाता है।उदाहरण के लिए -अग्नि शीतल है, क्योंकि वह द्रब्य है।स्पर्श करने पर अग्नि में शीतलता का अभाव ही नहीं बल्कि उष्णता का भाव पाया जाता है।इस तरह अग्नि का शीतल होना अनुमान से सिद्ध नहीं होता।